© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

भवभूति की रचनाओं में प्रणय–सौन्दर्य

कर्मवीर शोधछात्र वी.वी.बी.आई.एस.एण्ड आई.एस. पंजाब विश्वविद्यालय,
साधु आश्रम, होशियारपुर।

महाकवि भवभूति संस्कृत–साहित्याकाश के दीप्तिमान नक्षत्र हैं। अपनी नाट्यकृतियों द्वारा अक्षय यश अर्जित करने वाले इस महाकवि को काव्य–जगत में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। उनका पाण्डित्य तथा कवित्व अद्भुत है। उनकी मनोहर काव्यशैली में जहाँ करुण रस सहृदयों के हृदयों को आप्लावित करता है, वहीं मधुर शृंगार भी आनन्द से आन्दोलित करता है।

यदि भवभूति के प्रणय–चित्रण के विषय में कहा जाए तो यह अद्भुत गरिमा से पूर्ण है। भवभूति आदर्श प्रेम के व्याख्याता हैं। वासनामय कलुषित प्रेम उनकी रचना में नहीं है। उनकी दृष्टि में प्रेम बाह्य कारणों पर आश्रित न होकर आन्तरिक कारण पर स्थित होता है। सच्चा प्रेम सर्वदा एक–सा रहता है। भवभूति का प्रेम उदात्त, सौम्य, सभ्य, पवित्र, वासनामुक्त तथा एकरस है। सम्प्रति हम कतिपय उदाहरणों का समीक्षण करते हुए महाकवि के प्रणय–सौन्दर्य को समझने का यत्न करते हैं –

महाकवि भवभूति द्वारा रचित 'महावीरचरित' नाटक वीर रस प्रधान होने के कारण उसमें शृंगार और प्रेम के वर्णन को अधिक विस्तृत नहीं किया गया क्योंकि शृंगार का पल्लवन वीर रस नाटक में 'दोष' न बने, अतः उन्होंने महावीरचरित में शृंगार की ओर संकेत मात्र किया है, उसका विस्तार नहीं किया। महावीरचरित में राम और सीता का तथा लक्ष्मण और ऊर्मिला का प्रेम युगपत् प्रेम का उदाहरण है जहां प्रथम दर्शन में ही परस्पर प्रेम का प्रादुर्भाव होता है। इस नाटक में कवि ने अवसर निकालकर राम की विरहावस्था का यत्र–तत्र वर्णन भी किया है।[1] मालतीमाधव प्रकरण में प्रणय सौन्दर्य की छटा पूर्णतया विकसित हुई है। इसमें ही हमें पूर्वापर प्रेम के उदाहरण प्राप्त होते हैं। मालती के हृदय में माधव के दर्शन से[2] और मदयन्तिका के हृदय में मकरन्द के गुण–श्रवण से प्रेम उत्पन्न होता है।[3] वहीं मदनोद्यान में मालती के प्रथम दर्शन से माधव भी उसके प्रति आकृष्ट हो जाता है।[4] और मकरन्द व्याघ्र से मदयन्तिका के प्राणों की रक्षा करते समय उसके प्रथम दर्शन से ही उसमें आसक्त हो जाता है।[5] हृदय में प्रेम का बीजारोपण होने पर माधव का ध्यान मालती की विभिन्न शृंगारिक–चेष्टाओं पर रहने लगता है। प्रेम–व्यापार में दृष्टि का बहुत महत्त्व होता है, इसलिए कवि ने मालती के कटाक्षों का वर्णन चार पद्यों में किया है।[6] प्रेम की प्रारम्भिक अवस्था में माधव की मनःस्थिति का सुन्दर चित्रण द्रष्टव्य है –

परिच्छेदव्यक्तिर्न भवति पुरःस्थेऽपि विषये
भवत्यभ्यस्तेऽपि स्मरणमतथाभाविरसम्।
न सन्तापच्छेदो हिमसरसि वा चन्द्रमसि वा

1. महावीरचरित, 5/20–24
2. मालतीमाधव, 1/18, पृ. 63
3. मालतीमाधव, 3 पृ. 105
4. मालतीमाधव, 3, पृ. 111
5. मालतीमाधव, 4, पृ. 147
6. मालतीमाधव, 1/28–31

मनो निष्ठाशून्यं भ्रमति च किमप्यालिखति च।।[7]

मालती के प्रेम में माधव इतना भावाभिभूत हो जाता है कि उसे दक्षिण–वाम, आगे–पीछे सर्वत्र मालती ही दिखाई देती है –

पश्यामि तामित इतः पुरतश्च पश्चा–
दन्तर्बहिः परित एव विवर्तमानाम्।
उद्बुद्धमुग्धकनकाब्जनिभं वहन्ती–
मासङ्गतिर्यगपवर्तितदृष्टि वक्त्रम्।।[8]

माधव के प्रेम में मालती की भी यही दशा है। उसकी प्रणय–वेदना असह्य है। प्रस्तुत पद्य द्वारा मालती स्वयं अपनी दशा को अभिव्यक्त करती है –

मनोरोगस्तीव्रो विषमिव विसर्पत्यविरतं
प्रमाथी निर्धूमो ज्वलति विधुतः पावक इव।
हिनस्ति प्रत्यङ्गं ज्वर इव गरीयानित इतो
न मां त्रातुं तातः प्रभवति न चाम्बा न भवती।।[9]

तृतीय अंक में मालती की कामावस्था का विस्तृत वर्णन किया गया है। परन्तु कवि के बौद्धिक–कौशल के कारण माधव और मालती का यह उत्कृष्ट प्रेम पूर्णतया संयत और मर्यादित रहता है। उसका उद्देश्य दाम्पत्य–जीवन में प्रवेश करना है जिसकी पवित्रता और पारस्परिक कर्त्तव्य–भावना की ओर कामन्दकी ने अपने इस उपदेश में संकेत किया है –

प्रेयो मित्रं बन्धुता वा समग्रा
सर्वे कामाः शेवधिर्जीवितं वा।
स्त्रीणां भर्ता धर्मदाराश्च पुंसा–
मित्यन्योन्यं वत्सयोर्ज्ञातमस्तु।।[10]

भवभूति की श्रृंगार–भावना विशुद्ध प्रेम पर आधारित है। उसमें मदान्धता या काम–लिप्सा नहीं है। प्रेम की तीव्रतम अवस्था का चित्रण करते समय भी कवि ने कहीं लोक–व्यवहार एवं मर्यादा की अवहेलना नहीं की है। माधव के वियोग में मालती को चाहे आने प्राणों का त्याग करना पड़े, परन्तु वह अपने कुल की प्रतिष्ठा का क्षति नहीं चाहती है–

ज्वलतु गगने रात्रौ रात्रावखण्डकलः शशी
दहतु मदनः किं वा मृत्योः परेण विधास्यतः।
मम तु दयितः श्लाघ्यस्तातो जनन्यमलान्वया
कुलममलिनं न त्वेवायं जनो न च जीवितम्।।[11]

उत्तररामचरित मूलतः करुण रसमय है पर वहां राम और सीता के आदर्श दाम्पत्य–प्रेम को ही कवि ने आधार बनाया है। कवि ने दाम्पत्य प्रेम के विस्तृत चित्रण का कोई अवसर नहीं छोड़ा है। इसके प्रथम अंक में ही विवाहित जीवन की सरसता का सुन्दर उल्लेख मिलता है–

अलसलुलितमुग्धान्यध्वसंजातखेदा–
दशिथिलपरिरम्भैर्दत्तसंवाहनानि।
परिमृदित मृणाली दुर्बलान्यङ्गकानि–

7. मालतीमाधव, 1/34
8. मालतीमाधव, 1/43
9. मालतीमाधव, 2/1
10. मालतीमाधव, 6/18
11. मालतीमाधव, 2/2

त्वमुरसि मम कृत्वा यत्र निद्रामवाप्ता।।[12]

सीता का स्पर्श पाकर तथा उनके वचनों को सुनकर राम को अनिर्वचनीय आनन्द प्राप्त होता है। इस सन्दर्भ में निम्न श्लोक द्रष्टव्य है –

म्लानस्य जीवकुसुमस्य विकासनानि
सन्तर्पणानि सकलेन्द्रियमोहनानि।
एतानि ते सुवचनानि सरोरुहाक्षि
कर्णामृतानि मनसश्च रसायनानि।।[13]

भवभूति का दाम्पत्य–प्रेम अत्यन्त उज्ज्वल एवं भव्य है। राम को सीता के साथ सर्वांगीण सुख प्राप्त होता है। प्रस्तुत पद्य में राम को सीता की सभी वस्तुएँ प्रिय हैं परन्तु उसे सीता का विरह सर्वथा असह्य है। पति–पत्नी के प्रेम की पराकाष्ठा की ऐसी उत्कृष्ट कल्पना अन्यत्र दुर्लभ है –

इयं गेहे लक्ष्मीरियममृतवर्तिर्नयनयो–
रसावस्याः स्पर्शो वपुषि बहुलश्चन्दनरसः।
अयं बाहुः कण्ठे शिशिरमसृणो मौक्तिकसरः
किमस्या न प्रेयो यदि परमसह्यस्तु विरहः।।[14]

महाकवि ने दाम्पत्य जीवन का अत्यन्त मार्मिक और गहन चित्रण किया है उनके अनुसार दाम्पत्य प्रेम ही विवाह से मृत्यु–पर्यन्त परिपक्व अवस्था में रहता है तथा सुख और दुःख में समान रहता है –

अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगतं सर्वास्ववस्थासु य–
द्विश्रामो हृदयस्य यत्र जरसा यस्मिन्नहार्यो रसः।
कालेनावरणात्ययात्परिणते यत्प्रेमसारे स्थितं
भद्रं तस्य सुमानुषस्य कथमप्येकं कि तत्प्रार्थ्यते।।[15]

तृतीय अंक में वर्णित दण्डकारण्य में परिचित स्थानों के दर्शन से राम अत्यन्त व्याकुल होते हैं और फूट–फूट कर रोने लगते हैं। सीता का विरह उन्हें असह्य है। उनकी विरह–व्यथा सुनकर वज्र–हृदय भी विदीर्ण हो जाता है –

हा हा देवि! स्फुटति हृदयं ध्वंसते देहबन्धः
शून्यं मन्ये जगदविरतज्वालमन्तर्ज्वलामि।
सीदन्नन्धे तमसि विधुरो मज्जतीवान्तरात्मा
विष्वङ्मोहः स्थगयति कथं मन्दभाग्यः करोमि।।[16]

इस प्रकार उत्तररामचरित में शृंगार के दोनों पक्षों का परिपाक हुआ है। जो राम और सीता के असीम दाम्पत्य प्रेम को दर्शाता है। महाकवि भवभूति का मन्तव्य है कि प्रेम किन्हीं बाह्य कारणों पर आश्रित नहीं होता, उसमें कोई अनिर्वचनीय आन्तरिक कारण ही प्रमुख होता है। सूर्य के उदय होने पर ही कमल खिलता है और चन्द्रमा के उदय होने पर चन्द्रकान्त–मणि द्रवित होने लगती है।[17] प्रेमी अपने प्रिय के लिए कुछ न करने पर भी एक बहुत बड़ी निधि होता है।[18] स्त्री के लिए उसका पति और पति

12. उत्तररामचरित, 1/24
13. उत्तररामचरित, 1/36
14. उत्तररामचरित, 1/38
15. उत्तररामचरित, 1/39
16. उत्तररामचरित, 3/38
17. उत्तररामचरित, 6/12
18. उत्तररामचरित, 6/5

के लिए उनकी पत्नी दोनों परम प्रिय मित्र हैं। यही सबसे बड़ा संबंध है और यही साक्षात् जीवन भी है। ऐसे पवित्र प्रेम के धरातल पर भवभूति ने अपनी रचनाएँ अवतरित की है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महाकवि भवभूति आदर्श प्रेम के उपासक हैं, जो सुभग तथा अनुकरणीय है।